B.ED.-(2019-21)-First Year/BCC-4 (Language Across the Curriculum)

Date :- 16.05.2020 (Saturday)

(By Rakesh Sir)

UNIT-3/Ch-5 → (Developing Writing Skills and Linkage Between Reading and Writing)

Linkage Between Reading and Writing ÷
(पढ़ने एवं लिखने में सम्बद्धता) (Short type Question-Answer):-

Question → पठन एवं लेखन दक्षता के लिए क्रियाकलाप की गतिविधियों को स्पष्ट कीजिए। (Activity For Reading and Writing Efficiency)

उत्तर → पढ़ना और लिखना दो भिन्न कौशल हैं परन्तु ये एक-दूसरे के पूरक माने जाते हैं। अधिकांश मनोवैज्ञानिकों का मत है कि पढ़ने से पूर्व छात्रों को लिखने का अभ्यास कराया जाये। लिखना आने से छात्रों को स्वतः पढ़ना आ जाएगा। लिखना सीखने का सबसे अच्छा साधन है जिसमें बालकों को अक्षर-विन्यास का बार-बार अभ्यास कराया जाए। जब बालक शब्दों को बार-बार लिखते हैं तो उनको पहचानने लगते हैं और उन्हें पढ़ने भी आ जाता है।

पठन दक्षता के लिए क्रियाकलाप (Activity For Reading Efficiency):- पठन दक्षता विकास के लिए निम्नलिखित गतिविधियों का प्रयोग किया जा सकता है →

(1) आदर्श पठन (Ideal Reading):- छात्रों में पठन दक्षता के लिए आदर्श पठन का विशेष महत्त्व है। निबन्ध पाठ तथा कविता पाठ करते समय शिक्षक स्वयं शुद्ध उच्चारण प्रभावपूर्ण उचित हाव-भाव के साथ विषय-सामग्री का पठन करें। यही पठन दक्षता आदर्श पठन कहलाता है।

(2) अनुकरण पाठ (Simulation Lesson) – आदर्श पठन के पश्चात छात्रों के सस्वर वाचन के समय होने वाली अशुद्धियों पर शिक्षक ध्यान दें और फिर बाद में उनमें संशोधन कर दें। सामान्य रूप से पायी जाने वाली अशुद्धियों का वर्गीकरण करके ही उनकी अभ्यास सूचियाँ बनाई जायें तथा छात्रों से सामान्य रूप से सामूहिक रूप से उच्चारण कराया जाये।

(3) लिखना (Writing):- किसी भी भाषा के सभी वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। जिस रूप में वर्णों को लिखा जाता है, उसे लिपि कहा जाता है। शुद्ध वर्तनी लिखना कौशल का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

लेखन दक्षता के विविध क्रिया कलाप (Activity for writing Efficiency):
लेखन में दक्षता के लिए जिन शिक्षण-अधिगम सामग्रियों तथा गतिविधियों का शिक्षक प्रयोग करता है, वे इस प्रकार हैं—
(1) प्रारंभिक स्थिति में छात्रों को सीधी, आड़ी, तिरछी तथा वक्राकार रेखाएँ खींचने का अभ्यास कराना चाहिए। वर्ण, संयुक्ताक्षर तथा मात्रा लेखन का भी अभ्यास कराना चाहिए।
(2) छात्रों से पहले मात्रा-रहित शुद्ध शब्द श्यामपट्ट पर लिखवाना चाहिए तत्पश्चात् उन्हें देखकर लिखने का अभ्यास कराना चाहिए। फिर मात्रा मात्रा वाले शब्दों को श्यामपट्ट पर मोटे आकार में लिखवाएँ। अन्त में वाक्यों को देखकर लिखने के लिए कहा जाना चाहिए।
(3) छात्रों को वर्णों, मात्राओं और संयुक्ताक्षरों की सीख देने के बाद उन्हें सुलेख तथा श्रुतलेख का अभ्यास बार-बार कराएँ। सुलेख कराते समय वर्णों एवं शब्दों की आकृति की सुडौलता पर छात्रों से पाँच-पाँच लिखवाना चाहिए। अतः अन्त में उन्हीं शब्दों की सहायता से छोटे-छोटे वाक्य भी बनवाया जाना चाहिए।
(4) शिक्षक छात्रों से वर्तनी सुधार के लिए भी कुछ अभ्यास करा सकते हैं।

---

(2) प्रश्न → पठन एवं लेखन कौशल की सम्बद्धता पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (write a short notes on Linkage of Reading and writing skill.)

उत्तर— पठन एवं लेखन कौशल दोनों ही एक दूसरे के पूरक होते हैं। कक्षा में जो कुछ भी विषय-सामग्री पढ़ाई जाती है, उसका पूरी तरह से छात्रों को अधिगम हो गया है या नहीं, इसकी जाँच कैसे हो? परीक्षा व कक्षा में जितना भी कार्य कराया जाता है, वह प्रायः मौखिक पठन (सस्वर वाचन, मौन वाचन) के रूप में होता है। यदि यह मान लिया जाये कि हम अपने विचारों का प्रकाशन मौखिक रूप से अधिक करते हैं तब भी जीवन में कई अवसर आते हैं जब हमें लिखित रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करना पड़ता है। पठन भाव-प्रकाशन के लिए आवश्यक होता है, इसीलिए कक्षा में पठन पर बल दिया जाता है। पठन के माध्यम से हम नवीन सूचनाओं, सिद्धांतों और नियमों तथा सूत्रों से परिचित होते हैं। →

P.T.O.

Scanned with CamScanner

पठन के माध्यम से हम यह परिकल्पना कर लेते हैं कि छात्र अपने ज्ञान का विस्तार कर चुका है और वह छात्र अपने संबंधी विचारों तथा भावों की सरलता एवं शुद्धता से दूसरों के सामने व्यक्त भी कर सकता है तथा लिख भी सकता है। इस परिकल्पना में सत्य का अंश अवश्य है किन्तु जिस समय छात्र लिखने बैठता है, उसे शब्द ढूँढ़ने पड़ते हैं। उसे अपने भावों को संगत भाषा में लिखित रूप में व्यक्त करना पड़ता है तथा वर्तनी की शुद्धता का भी ध्यान रखना पड़ता है।

लिखित कार्य करते समय छात्र के समक्ष यह अड़चनें आती हैं परन्तु यदि उसने विषय-वस्तु को ठीक प्रकार से पढ़ा होता है और उस विषय-सामग्री को बोधगम्य किया होता है, तो उसके मन विचार भी उत्पन्न होते हैं और जब तक छात्र ने पठन सामग्री का ठीक से अध्ययन नहीं किया है, उसे अक्षरों की पहचान ठीक प्रकार से नहीं होती है। अशुद्धियों पर वह ठीक से ध्यान नहीं [redacted] है तब तक वह शुद्ध रूप में लिख भी नहीं पाता है। पढ़ने के बाद पढ़ने की जाँच लिखने के द्वारा ही की जाती है और लिखकर ही वह भावों को बोधगम्य करता है जिससे पठन में गंभीरता आती है।

शुद्ध लेखन व्यक्ति के भाषा ज्ञान को दर्शाता है और भाषा ज्ञान पठन के माध्यम से ही विकसित होता है। लिखित भाषा में व्यक्त भावों और विचारों को समझने के लिए भी पठन एवं लेखन कौशल में संयोजन होना आवश्यक है। पठन एवं लेखन दोनों में ही अक्षर का होना आवश्यक है। इसके साथ-साथ दोनों में ही मात्राओं का ज्ञान भी होना आवश्यक है पठन एवं लेखन में सम्बद्धता के लिए व्याकरण का ज्ञान होना भी आवश्यक है।

(Chapter end)

प्रश्न-1 H.W. (self to do) → (स्वयं से पुस्तकानुसार लिखें।)

प्रश्न-2 (Long type) पठन एवं लेखन की दक्षता के लिए कौन-कौन से उपाय माने जाते हैं? लिखिए।

प्रश्न-3 लेखन कौशल की समस्याओं का निराकरण संक्षिप्त में लिखिए (short type)

(Note → अगली कक्षा से Revision (पुनरावृत्ति-कार्य) Class BCC-4 से बारे पाठों से)